CHETANA
International Journal of Education

Impact Factor
SJIF=5.689

Peer Reviewed/
Refereed Journal

ISSN-Print-2231-3613
Online-2455-8729

Prof. A.P. Sharma
Founder Editor, CIJE
(25.12.1932 - 09.01.2019)

Received on 24th Sep. 2020, Revised on 26th Sep. 2020, Accepted 30th Sep. 2020

आलेख

भारत में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम सुधार

* डॉ. अंजली मोंगा
एसोसियट प्रोफेसर,, गुरू काशी विश्वविद्यालय
तलवण्डी साबो, भटिण्डा, पंजाब
Email: dranjalimonga1@gmail.com, Mo. - 9417667842

बीज शब्द – *व्यावसायिक तैयारी. सामाजिक-संस्कृति और सामाजिक-आर्थिक लोकाचार आदि।*

प्रस्तावना

शिक्षक विकास को पूर्व-सेवा, प्रेरण प्रशिक्षण, इन-सेवा प्रशिक्षण और ऑन-गोइंग व्यावसायिक विकास कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों में पेशेवर क्षमता को विकसित करने और बनाए रखने की निरंतर प्रक्रिया के रूप में माना जाता है। पूर्व-सेवा, शिक्षकों में विकासशील व्यावसायिकता की सीढ़ी का पहला कदम है, जो समकालीन शैक्षिक प्रणाली की जरूरतों के अनुकूल अच्छी तरह से डिजाइन किए गए शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों की व्यावसायिक तैयारी पर निर्भर है। शिक्षक शिक्षा का विद्यालयी शिक्षा के साथ सहजीवी संबंध है। शिक्षा के पूरे तंत्र की गुणवत्ता में सुधार के लिए आवश्यक सरोकारों को दोनों क्षेत्रों में विकास और परिवर्तन परस्पर सुदृढ़ करते हैं। इसलिए, शैक्षिक प्रणाली में किसी भी सुधार को आदर्श रूप से शिक्षक तैयारी पाठ्यक्रमों में सुधार के साथ होना चाहिए। भारत ने इस सैद्धांतिक विचारधारा को व्यवहार में लाने की कोशिश की है। नतीजतन, स्कूली शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम की रूपरेखा में बदलाव के साथ, हम तदनुसार शिक्षक तैयारी पाठ्यक्रम को समायोजित करने के लिए प्रयास करते हैं। देश के नीति नियोजकों द्वारा अब तक चार प्रमुख प्रयास किए गए हैं, जो देश की सामाजिक-संस्कृति और सामाजिक-आर्थिक लोकाचार के अनुसार शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम की एकरूपता और गुणवत्ता में वैचारिक दिशा प्रदान करते हैं। पहला व्यापक प्रयास 1978 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) में स्थित एक गैर-सांविधिक निकाय, राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) द्वारा "शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम: एक ढाँचा" के प्रकाशन के साथ किया गया था।

NCTE की प्रमुख सिफारिशें

1. बच्चों और स्कूलों की व्यक्तिगत और सामाजिक आवश्यकताओं के लिए पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता; साथ ही लोगों और राष्ट्र की विचारधारा की आकांक्षाएं।

2. स्वीकार्य राष्ट्रीय लक्ष्यों और मूल्यों के ढांचे के भीतर लचीलापन। फ्रेमवर्क ने सुझाव दिया कि इस लचीलेपन की आवश्यकता न केवल चरण वार शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के बीच बाधाओं को तोड़ने के लिए है, बल्कि विभिन्न विषयों के बीच भी है। ' प्रासंगिकता, गतिशीलता और निरंतर शिक्षा के लिए लचीलापन पर जोर दिया गया।

3. शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में अंतःविषय और एकीकृत दृष्टिकोण को इतना डिजाइन किया जाना चाहिए कि सिद्धांत पाठ्यक्रमों के बीच एकीकरण होता है, और यह एकीकृत शैक्षणिक समझ कौशल में प्रवाहित होती है, जो विभिन्न विषयों के साथ-साथ दृष्टिकोण-निर्माण क्षेत्रों में शिक्षण की कार्यप्रणाली पर हावी होती है। कार्य अनुभव, स्वास्थ्य, शारीरिक और मनोरंजक शिक्षा, साथ ही समाज सेवा।

4. कार्य-उन्मुख शिक्षक शिक्षा। शिक्षक शिक्षा को "कक्षा के अंदर और बाहर विभिन्न प्रकार के कार्यों को संभालने के लिए शिक्षक को प्रशिक्षित करने के अभ्यास के रूप में माना जाना चाहिए।"

5. अभ्यास शिक्षण में सुधार। फ्रेमवर्क ने सुझाव दिया कि छात्र शिक्षकों को वास्तविक कक्षाओं में धकेलने से पहले अनुकरण, माइक्रोटीचिंग स्थितियों की एक श्रृंखला के माध्यम से रखा जाना चाहिए।

6. वर्षवार पाठ्यक्रम को बदलने के लिए सेमेस्टर प्रणाली का सुझाव दिया गया था।

7. मूल्यांकन प्रणाली को अधिक विश्वसनीय और वैध बनाया जाना।

8. शिक्षक शिक्षा संस्थानों में अनुसंधान और प्रयोग को बढ़ावा देना।

यह पाठ्यक्रम फ्रेमवर्क दो तरीकों से मौजूदा मॉडलों से पर्याप्त रूप से प्रस्थान किया गया था- पहली बार शिक्षक शिक्षा फ्रेमवर्क पाठ्यक्रम (TECF) 1978 में शिक्षा के विभिन्न चरणों के लिए अलग से पाठ्यक्रम संरचना की कल्पना की गई थी, और दूसरा इसने पाठ्यक्रम के लिए सेमेस्टर दृष्टिकोण की वकालत की। इसने शिक्षक प्रशिक्षुओं को समाज में वास्तविक कार्य स्थितियों के माध्यम से जटिल सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को उजागर करके एक स्पष्ट कार्य-उन्मुख दृष्टिकोण की सिफारिश की, ताकि वास्तविक जीवन के अनुभवों से सैद्धांतिक शिक्षा को मान्य और सुदृढ़ किया जा सके। इस रूपरेखा में ग्रामीण शहरी संदर्भों, और बाल विकास के विभिन्न चरणों को संबोधित करने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया, और इसने विभिन्न कोर और विशेष पाठ्यक्रमों को सुझाव दिया कि वे संदर्भ को विशिष्ट रूप से संबोधित करें, और शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करें। तदनुसार, इसने सभी प्रकार के शिक्षकों के लिए अपरिहार्य कुछ विशिष्ट कौशलों की सिफारिश की, जैसे, अंतर्निहित वैचारिक सीखने के व्यवहार की पहचान, मौखिक अभिव्यक्ति, शिक्षण सामग्री की तैयारी, ब्लैक बोर्ड लेखन और कुछ सामान्य ऑडियो-विजुअल एड्स और इतने पर और विभिन्न आयु स्तरों पर विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए आवश्यक विशिष्ट कौशल।

गुणात्मक सुधार लाने और व्यावसायिक शिक्षा शिक्षक बनाने का एक और महत्वपूर्ण प्रयास 1988 में किया गया था। 1988 के पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) की पृष्ठभूमि के खिलाफ विकसित किया गया था, जिसमें सभी चरणों के पाठ्यक्रम को मजबूत करने और पुनर्गठन के लिए शिक्षक शिक्षा का महत्वपूर्ण निहितार्थ हैं। इस ढांचे ने पूर्ववर्ती वर्षों में हुए विकासों को समेकित किया, और शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में

ज्ञान और प्रौद्योगिकी में हुए विकास को समायोजित करने की आवश्यकता पर बल दिया। इस ढाँचे में शिक्षक की बदलती भूमिका पर ज़ोर दिया गया था क्योंकि "भावी शिक्षक एक सक्षम पेशेवर और एक कुशल शिक्षक होगा। सिद्धांत और व्यवहार के बीच संतुलन रखने की आवश्यकता को रूपरेखा में प्रकट किया गया था "पाठ्यक्रम को एक के ऊपर एक किए बिना अपने व्यावहारिक अनुप्रयोग के साथ सैद्धांतिक समझ के एकीकरण पर जोर देना चाहिए"। इस फ्रेमवर्क द्वारा उचित भार के साथ व्यावहारिक या क्षेत्र कार्य के लिए केंद्रीय स्थान का सुझाव दिया गया था।

पाठ्यक्रम सामग्री इसलिए शामिल है

क) फाउंडेशन पाठ्यक्रम, मुख्य रूप से दार्शनिक और सामाजिक दृष्टिकोण और शिक्षा के मनोवैज्ञानिक आधारों पर जोर देता है।

ख) चरण-प्रासंगिक विशेषज्ञताओं, मंच के लिए सामान्य तरीके से शिक्षक के पेशेवर कार्यों की समझ पर जोर देना और प्रासंगिक स्कूली विषयों को सिखाने की दक्षता और कौशल।

ग) फील्ड वर्क या प्रैक्टिकम, कक्षा शिक्षण में और छात्रों, माता-पिता और समुदाय को शामिल करने वाली व्यावहारिक गतिविधियों में सिद्धांत के अनुप्रयोग पर जोर देना।

1993 में संसद के एक अधिनियम द्वारा एक सांविधिक निकाय के रूप में राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (NCTE) की स्थापना के साथ, 1998 में 'गुणवत्ता शिक्षक शिक्षा के लिए एक और पाठ्यचर्या की रूपरेखा' खरीदी गई थी। जबकि 1978 शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम की रूपरेखा विकसित की गई थी। 1975 स्कूल शिक्षा पाठ्यक्रम सुधार की पृष्ठभूमि, और NPE 1986 की पृष्ठभूमि पर 1988 की रूपरेखा, शिक्षक शिक्षा के लिए 1998 की रूपरेखा पूर्ववर्ती स्कूल पाठ्यक्रम ढांचा है जो राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT) द्वारा 2000 में विकसित किया गया था। यह ढांचा (1998)) वैश्वीकरण, निजीकरण और संचार प्रौद्योगिकी आदि के परिणाम के रूप में बदलते अंतर्राष्ट्रीय परिदृश्य को संबोधित करने और प्रतिबिंबित करने की कोशिश की गई। इस ढांचे में अंतर्राष्ट्रीय मांगों और राष्ट्रीय जीवन की वास्तविकताओं के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की गई। पूर्व के ढांचे से एक प्रमुख प्रस्थान में यह शिक्षक की तैयारी के लिए पाठ्यक्रम और कार्यक्रमों को विकसित करने में मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में प्रतिबद्धता, क्षमता और प्रदर्शन को स्वीकार करता है।

इन रूपरेखाओं द्वारा प्रस्तावित सामग्री, अवधि, लेन-देन पद्धति और मूल्यांकन प्रणालियों के संदर्भ में शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम की प्रवृत्ति विश्लेषण से भारतीय शिक्षा प्रणाली की समकालीन जरूरतों को पूरा करने के लिए पाठ्यक्रम योजनाकारों के प्रयासों का पता चलता है। 1978 की रूपरेखा ने संबंधित व्यावहारिक कार्यों सहित सामग्री-सह-पद्धति और अभ्यास शिक्षण घटक के समुदाय और संगठन के साथ काम करने के लिए 80% वेटेज दिया। 1988 की रूपरेखा में, शिक्षण और संबंधित व्यावहारिक कार्यों के अभ्यास के लिए सिद्धांत और चरण विशिष्ट विशेषज्ञता और वेटेज की ओर जोर दिया गया था, जो केवल 40% तक कम हो गया था। नतीजतन, शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम अधिक सैद्धांतिक हो गया और इसके लिए अक्सर आलोचना की गई। 1998 के पाठ्यक्रम के ढांचे ने थ्योरी पेपर्स पर वेटेज को 40% तक कम कर दिया, और अभ्यास अध्यापन, और संबंधित व्यावहारिक कार्य के लिए छात्र शिक्षकों को अधिक अवसर प्रदान किया। पहले के ढांचे (1978, और 1988) से एक प्रमुख प्रस्थान में, इस ढांचे ने प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षकों दोनों के लिए दो साल की पेशेवर तैयारी की अवधि का समर्थन किया।

पाठ्यचर्या की रूपरेखा का गैर-कार्यान्वयन

इन सभी सिफारिशों के बावजूद, स्थिति आज भी बहुत ज्यादा नहीं बदली है। इन पाठ्यक्रम रूपरेखाओं द्वारा सुझाए गए परिवर्तनों को जमीनी स्तर पर पूरी तरह से लागू नहीं किया गया है। हालांकि 1978 की रूपरेखा का प्रभाव शिक्षक शिक्षा के क्षेत्र स्तर पर देखा जा सकता है, 1988 के ढांचे के मामले में कभी कोई प्रयास नहीं किया गया था, वास्तव में इस मामले में अधिकांश लोग इस ढांचे के बारे में पूरी तरह से अवगत भी नहीं हैं; और कुछ उदाहरणों को छोड़कर, और 1998 के ढांचे के बीज अभी तक अंकुरित नहीं हुए हैं। इस ढांचे को लाया गया एकमात्र परिवर्तन एनसीईआरटी के क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान और गुजरात विद्यापीठ में दो साल के माध्यमिक शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की शुरुआत था। इसके अलावा शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम में कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं दिखाई दे रहा है।

शिक्षार्थियों को आज अन्वेषण, पूछताछ और जांच करने के लिए काफी स्वतंत्रता की आवश्यकता है। इसका मतलब यह है कि शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम को तार्किक तर्क, महत्वपूर्ण सोच, समस्या को हल करने और अर्थ बनाने के लिए छात्र शिक्षकों को पर्याप्त स्थान देना चाहिए। हालांकि, नींव पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षक शिक्षा संस्थानों में प्रदान किया गया अभिविन्यास अक्सर बहुत सैद्धांतिक है और शिक्षकों को केवल असंबंधित और खंडित ज्ञान प्रदान करता है। यह सीखने वाले छात्रों, उनके सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश, उनके विकास के चरणों, उनके द्वारा किए जा रहे शारीरिक और मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों और उनकी सीखने की शैलियों पर इन कारकों के प्रभाव के बारे में छात्र शिक्षकों में गहरी समझ विकसित करने में विफल रहता है। इसलिए शिक्षकों में चिंतनशीलता विकसित करने के लिए सामग्री और शिक्षाशास्त्र में काफी विविधता की आवश्यकता है।

देश के मौजूदा सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में शिक्षकों को स्कूलों और समाज में बढ़ती नस्लीय, नैतिक और सांस्कृतिक और भाषाई विविधता के कारण तार्किक और चिंतनशील होने की आवश्यकता है, जो व्यापक दिमाग वाले नागरिकों की मांग करता है। इसके अलावा क्योंकि कई अनुभवजन्य साक्ष्य बताते हैं कि शिक्षक की अपनी मान्यताएं उनकी कक्षा की स्थितियों में विविधता का जवाब देने में प्रमुख भूमिका निभाती हैं। शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम, इसलिए कठोर अभ्यास शिक्षण और / या इंटर्नशिप के माध्यम से जांच, पहल, वैज्ञानिक स्वभाव, वैचारिक स्पष्टता और भाषाई कौशल की भावना को विकसित करने के लिए योजनाबद्ध और संगठित होने की आवश्यकता है जो अब तक शिक्षक तैयारी का एक उपेक्षित क्षेत्र बना हुआ है।

शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2009

स्कूली शिक्षा के साथ-साथ आधुनिकीकरण, प्रासंगिकता और व्यावसायिकरण की दिशा में शिक्षक शिक्षा का कायाकल्प करने का एक बड़ा प्रयास क्रमशः 2005 और 2009 में स्कूल शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005), और शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2009) के माध्यम से बनाया गया है। हाल के वर्षों के दौरान सीखने की महामारी विज्ञान में एक बड़ा बदलाव आया है; अर्थात् सीखने में वास्तविकता की खोज नहीं होती, बल्कि वास्तविकता का निर्माण होता है। ज्ञान और अनुभूति का निर्माण किया जाना है और प्रभावित महसूस किया जाना है। सीखना ज्ञान और विचारों का अधिक निष्क्रिय अवशोषण नहीं है, लेकिन विचारों का निर्माण किसी के व्यक्तिगत अनुभवों पर विकसित हुआ है। जोर, अब, सीखने के रचनात्मक दृष्टिकोण की ओर स्थानांतरित कर दिया गया है। अधिगम को

शिक्षार्थी के शारीरिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों का एक अभिन्न अंग भी माना जाता है। इस अवधारणा को स्थित अनुभूति के रूप में जाना जाता है और NCERT द्वारा विकसित नेशनल एजुकेशन फ्रेमवर्क फॉर स्कूल एजुकेशन (2005) का मार्गदर्शक सिद्धांत है। NCF 2005 एक शिक्षक से अपेक्षा करता है कि वह छात्रों के सीखने का सूत्रधार हो, जो उन्हें अपने व्यक्तिगत अनुभवों का उपयोग करके ज्ञान और अर्थ का निर्माण करने में मदद करता है। इसलिए, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम के पूरे शैक्षणिक दृष्टिकोण को पारंपरिक व्यवहारवादी से रचनात्मक रचनाकारों तक पहुंचाने की आवश्यकता है। NCTE द्वारा विकसित नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन (2009) यह सुनिश्चित करने की कोशिश करता है कि शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों को NCF 2005 में परिकल्पित महामारी विज्ञान के साथ संरेखित किया जाए और शिक्षकों को सीखने के सूत्रधार के रूप में विकसित किया जाए। इसमें शिक्षक शिक्षा के संदर्भ, सरोकार और दर्शन शामिल हैं जो शिक्षण समाज के लिए शिक्षकों को तैयार करने, सीखने के लिए शिक्षकों को सशक्त बनाने और शिक्षक शिक्षा को उदार, मानवतावादी और समावेशी शिक्षा की मांगों के प्रति उत्तरदायी बनाने के लिए कहते हैं। इसने बदलते स्कूल संदर्भों और मांगों को हाल ही में लागू किए गए शिक्षा के अधिकार अधिनियम (आरटीई 2009), छात्रों के शैक्षणिक बोझ के मुद्दे, और माध्यमिक शिक्षा के सार्वभौमिकरण कि शिक्षक शिक्षा के लिए निहितार्थ के प्रकाश में शामिल करने की कोशिश की है। इस ढांचे से जुड़ी प्रमुख चिंताओं में समावेशी शिक्षा, समतामूलक और सतत विकास सुनिश्चित करना, शिक्षा में सामुदायिक ज्ञान का उपयोग करना, और शिक्षक शिक्षा के पाठ्यक्रम में आईसीटी और ई-लर्निंग का एकीकरण शामिल है, जो एनसीएफ 2005 और जोर की जरूरत के अनुरूप है। समकालीन भारतीय समाज के।

इसलिए, पाठ्यक्रम के दार्शनिक, समाजशास्त्रीय और मनोवैज्ञानिक अभिविन्यास पर आधारित शिक्षक तैयारी के लिए पारंपरिक दृष्टिकोण ने design ध्यान से तैयार की गई पाठ्यक्रम डिजाइन का तरीका दिया है जो सैद्धांतिक और अनुभवजन्य ज्ञान के साथ-साथ छात्र शिक्षकों के अनुभवात्मक ज्ञान '(NCFTE 2009) को आकर्षित करता है। इस ढांचे द्वारा पहचाने जाने वाले तीन व्यापक पाठयक्रम क्षेत्र हैं: (ए) शिक्षा की नींव जिसमें तीन रुब्रिकों के अंतर्गत पाठ्यक्रम शामिल हैं, अर्थात् शिक्षार्थी अध्ययन, समकालीन अध्ययन और शैक्षिक अध्ययन; (बी) पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र पाठ्यक्रम अध्ययन और शिक्षाशास्त्र अध्ययन सहित; और (सी) स्कूल इंटर्नशिप, परिप्रेक्ष्य, पेशेवर क्षमताओं, शिक्षक संवेदनशीलता और कौशल (NCFTE 2009) के व्यापक प्रदर्शनों के विकास के लिए अग्रणी। इस पाठ्यक्रम के ढांचे के माध्यम से NCF 2005 द्वारा देखे गए मुद्दों, चिंताओं और शैक्षणिक बदलावों को न केवल संबोधित करने का प्रयास किया गया है, बल्कि पूरे शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम को एक कार्बनिक और एकीकृत संपूर्ण के रूप में व्यवस्थित किया गया है।

यह ढांचा चार साल के एकीकृत शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों के साथ दो साल के शिक्षक तैयारी कार्यक्रम की परिकल्पना करता है। यह महसूस किया जाता है कि शिक्षक की तैयारी की लंबी अवधि शिक्षकों, छात्रों, कक्षाओं और शैक्षणिक गतिविधियों के साथ आत्म-अध्ययन, प्रतिबिंब और सगाई के लिए पर्याप्त समय और अवसर प्रदान करेगी जो शिक्षकों में व्यावसायिकता विकसित करने के लिए आवश्यक है। यह शिक्षा के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों को शामिल करके, कक्षा में वास्तविकताओं के लिए शिक्षक शिक्षा संस्थानों के सैद्धांतिक प्रवचनों की असंबद्धता के संबंध में आलोचना को संबोधित करने का प्रयास करता है, जो प्रैक्टिकम के माध्यम से सभी में छात्र शिक्षकों के क्षेत्र के अनुभव को अधिक वेटेज देता है, अभिनव का दौरा करता है। शिक्षाशास्त्र और शिक्षा के केंद्र, कक्षा आधारित अनुसंधान, इंटर्नशिप की लंबी अवधि यानी दो साल के कार्यक्रम के लिए छह से दस सप्ताह की न्यूनतम अवधि (प्रति सप्ताह चार दिन) और चार साल के कार्यक्रम के लिए 15-20 सप्ताह, जिसमें एक

प्रारंभिक चरण भी शामिल है। एक नियमित शिक्षक के साथ एक नियमित कक्षा का अवलोकन करने के लिए एक सप्ताह आवश्यक है। यह इकाई योजना विकसित करने और चिंतनशील पत्रिकाओं को बनाए रखने पर जोर देता है जो वर्तमान में हमारे शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों से गायब है, विशेष रूप से माध्यमिक स्तर पर।

व्यावसायीकरण के लिए प्रभाव

हालांकि देश के शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम के क्षेत्र में इस नवीनतम विकास के प्रभाव की भविष्यवाणी करना जल्दबाजी होगी, फिर भी कार्यान्वयन स्तर पर कुछ विरोधाभासों को देखा जा सकता है जिन्होंने हमेशा देश के शिक्षक शिक्षा की प्रणाली को इसकी गुणवत्ता को प्रभावित किया है। दुर्भाग्य से परिवर्तन की चिंता वैचारिक स्तर पर प्रवचनों तक सीमित रहती है और बहुत कम ही व्यवहार में अनुवादित होती है। नतीजतन, हम अभी भी देश के कुछ हिस्सों में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम पाते हैं जो शिक्षा के मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और समाजशास्त्रीय आधार के पारंपरिक दृष्टिकोण को जारी रखते हैं, बजाय इसके कि कैसे इन संज्ञानात्मक विषयों का ज्ञान बच्चों को समझने से संबंधित हो सकता है? और जानें। हाल ही में NCERT द्वारा B.Ed और M.Ed स्तर पर शिक्षक की तैयारी के लिए विकसित पाठ्यक्रम अपने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के लिए, और देश के लिए NCTE सामग्री और विषयों के बड़े बदलाव को दर्शाता है जो अध्ययन के विभिन्न पाठ्यक्रमों में शामिल हैं। शिक्षा की लागू प्रकृति को समझने की क्षमता के साथ चिंतनशील शिक्षकों को विकसित करने और वास्तविक कक्षाओं में शिक्षक तैयारी पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त ज्ञान का उपयोग करने की काफी संभावना है, जिससे वास्तविक कक्षा की वास्तविकताओं की अविश्वसनीयता और एक प्रशिक्षण संस्थान की सैद्धांतिक अभिव्यक्तियों के बीच की खाई को समाप्त किया जा सके।

शिक्षक तैयारी की अवधि भी चिंता का कारण रही है। भावी शिक्षकों में व्यावसायिकता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की लंबी अवधि की जरूरत पर कोई भी नीतिगत दस्तावेज और शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम ढांचा तैयार नहीं किया गया है और बी.एड कोर्स की अवधि के लिए आम सहमति कम से कम दो साल की है, फिर भी जमीन वास्तविकताएं कभी नहीं बदलीं। शिक्षकों की पेशेवर तैयारी के लिए लंबी अवधि के सवाल ने एक बार फिर एनसीटीई के पाठ्यक्रम डेवलपर्स का ध्यान आकर्षित किया है। इसलिए, हालांकि शिक्षक शिक्षा की रूपरेखा (2009) शिक्षक तैयारी कार्यक्रम के दो साल की सिफारिश करती है, लेकिन बीसीई पाठ्यक्रम के लिए NCTE द्वारा विकसित पाठ्यक्रम केवल एक वर्ष के लिए है। इससे शिक्षक शिक्षा प्रणाली में कोई वास्तविक परिवर्तन लाने के लिए विभिन्न तिमाहियों से दबाव झेलने और पारंपरिक रास्ते से हटने के चक्कर में उन लोगों के इरादे के बारे में आशंका पैदा होती है।

एक और विरोधाभास जो देखा जा सकता है, वह यह है कि, स्कूली शिक्षा और शिक्षक शिक्षा संस्थानों, दोनों के लिए रचनात्मक दृष्टिकोण को स्वीकार्य दृष्टिकोण के बावजूद, व्यवहारवादी दृष्टिकोण और मात्रात्मक ग्रेडिंग सिस्टम का उपयोग करके शिक्षार्थियों के प्रयासों और उपलब्धियों का मूल्यांकन किया जा रहा है। इसके अलावा शिक्षण के लिए दबाव के रूप में रॉट मेमोराइजेशन के विरोध में 'और इनोवेटिव के रूप में समय-समय पर परीक्षण किए गए पारंपरिक तरीकों से शिक्षक तैयारी की चुनौतियों को जोड़ा जाता है जिसका सिस्टम को जवाब देना होता है।

NCF 2005 शैक्षणिक और पाठ्यचर्या के दृष्टिकोण पर केंद्रित है जो शिक्षकों के हिस्से पर बहुत अधिक जिम्मेदारी और स्वामित्व प्रदान करता है जैसे कि संस्कृति विशिष्ट संदर्भ, उदाहरण, लोककथा, लोक कथाएँ, और कक्षा में व्यक्तिगत शिक्षार्थियों के अनुभवों का उपयोग। इसके लिए

शिक्षक तैयार करने के लिए अधिक यथार्थवादी और अनुभवजन्य रूप से स्थापित मॉडल की आवश्यकता होती है ताकि वे शिक्षकों में आवश्यक कौशल, योग्यता और दृष्टिकोण विकसित कर सकें। शिक्षक पाठ्यक्रम में परिवर्तन केवल इसके सफल कार्यान्वयन की गारंटी नहीं देता है। यह उभरती हुई शिक्षाविदों में शिक्षक शिक्षकों के पुनर्स्थापन का आह्वान करता है जिन्हें पारंपरिक तरीकों से प्रशिक्षित किया जाता है और पारंपरिक शिक्षाविदों के लिए उपयोग किया जाता है। यह समस्या आगे चलकर स्कूल स्तर पर शिक्षण में शिक्षक शिक्षकों के बहुमत के अनुभवों की कमी के रूप में सामने आई है। शिक्षकों की तैयारी में कुछ भी महत्वपूर्ण बदलाव नहीं किया जा सकता है यदि शिक्षक शिक्षकों की तैयारी में संबंधित परिवर्तनों की कल्पना की जाए। इसलिए, उन्हें खुद को पारंपरिक दृष्टिकोणों को सीखने और उभरते हुए दृष्टिकोणों और शिक्षण सामग्री के ज्ञान को सीखने की सुविधा के रूप में कार्य करने की आवश्यकता होती है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष निकालने के लिए, कोई भी प्रभावी शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रम विभिन्न स्तरों पर शिक्षकों के व्यवस्थित कार्य विश्लेषण और प्रासंगिक सामग्री को शामिल करने के लिए कहता है, जो अकेले कक्षा में स्कूल के पाठ्यक्रम पर बातचीत करने के लिए भावी शिक्षकों के बीच विश्वास को बाधित कर सकता है। वर्तमान शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम विभिन्न भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों की चुनौतियों और NCF 2005 में परिकल्पित बदलाव की चुनौतियों का सामना करने के लिए अपर्याप्त है। इस दृष्टिकोण से शैक्षणिक सुधार को पेशेवरों की स्वायत्त चिंतनशील समूहों के रूप में कार्य करने के लिए शिक्षकों की क्षमता पर निर्माण करने की आवश्यकता है। जो अपने सामाजिक जनादेश और पेशेवर नैतिकता और शिक्षार्थियों के विषम समूहों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील हैं। शिक्षक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2009) ने दृष्टि को वास्तविकता में अनुवाद करने और मानवतावादी और चिंतनशील शिक्षकों को तैयार करने का वादा किया है जिसमें अधिक पेशेवर शिक्षकों को विकसित करने और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने की क्षमता है। निष्कर्षतः, व्यावसायिकता को प्रत्येक में स्थापित करने की आवश्यकता है। शिक्षकों को तैयार करने और शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए मूल्यांकन और मूल्यांकन के लिए अवधारणा से शुरू होने वाली शिक्षक तैयारी के हर चरण की आवश्यकता है। ।

संदर्भ

1. अल्बर्ट, आई. ओलिवर. और मीड एंड गो.न्यूयॉर्क, (1969)पाठ्यक्रम सुधार के लिए एक गाइड समस्याएं, सिद्धांत और प्रक्रियाएं।
2. अविनाश चंद्र, (1977), पाठ्यक्रम विकास और शिक्षा में मूल्यांकन, स्टर्लिंग पब, नई दिल्ली।
3. कैम्पबेल, एल, और कैम्पबेल, बी (1999), मल्टीपल इंटेलिजेंस एंड स्टूडेंट अचीवमेंट: स्कूलों से सफलता की कहानियां, अलेक्जेंड्रिया, पर्यवेक्षण और पाठ्यक्रम विकास के लिए एसोसिएशन
4. कैर. जे. सी., और हैरिस, डी. ई. (2001), मानकों के साथ सफल: पाठ्यक्रम, मूल्यांकन और कार्य योजना को जोड़ना। अलेक्जेंड्रिया,: पर्यवेक्षण और पाठ्यक्रम विकास के लिए एसोसिएशन।

5. ग्लेथॉर्न, ए. ए., (1998), प्रदर्शन मूल्यांकन और मानक-आधारित पाठ्यक्रम: उपलब्धि चक्र।

6. हैरिस, डी. और कैर, जे. (1996), कक्षा में मानकों का उपयोग कैसे करें, अलेक्जेंडर, : पर्यवेक्षण और पाठ्यक्रम विकास के लिए एसोसिएशन।

7. वाशिंगटन,(1955), एसोसिएशन फ़ॉर सुपरविज़न एंड करिकुलम डेवलपमेंट,पाठ्यक्रम में मार्गदर्शन, पर्यवेक्षण के लिए एसोसिएशन और पाठ्यक्रम विकास।

**** Corresponding Author***

डॉ. अंजली मोंगा

एसोसियट प्रोफेसर,, गुरू काशी विश्वविद्यालय, तलवण्डी साबो, भटिण्डा, पंजाब

Email: dranjalimonga1@gmail.com, Mo. - 9417667842